International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 05 May- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विदेशी व्यापार एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों का अध्ययन

संजय कुमार बक्शी, सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग, रामनारायण यादव मेमोरियल कॉलेज बरही हजारीबाग

सारांश

भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी बन रहा है, जो आंशिक रूप से 1990 के दशक की शुरुआत से टैरिफ में कमी और अपेक्षाकृत कम गैर-टैरिफ बाधाओं को दर्शाता है। यह सूचना और प्रौद्योगिकी सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स और पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात में बहुत अच्छा प्रदर्शन करता है। भारत का बड़ा प्रवासी विदेशों में अच्छी तरह से एकीकृत है, जो नए निर्यात बाजारों को विकसित करने और प्रौद्योगिकी और ज्ञान के हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करने में मदद करता है। हालांकि, भारत कुछ डोमेन में बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। इनमें श्रम-गहन विनिर्माण निर्यात शामिल हैं, जहां भारत को स्पष्ट प्रतिस्पर्धात्मक लाभ है, और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश। इन क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन से रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा और इस प्रकार विकास अधिक समावेशी होगा। इसके लिए आगे के बुनियादी ढांचे में सुधार, विशेष रूप से परिवहन और ऊर्जा प्रावधान, उत्पाद बाजार नियमों का आधुनिकीकरण, कौशल विकसित करना और व्यापार और निवेश के लिए बाधाओं पर पुनर्विचार करना होगा। ओईसीडी सिमुलेशन से पता चलता है कि यदि व्यापार और निवेश में बाधाओं को बहुपक्षीय रूप से कम किया जाता है तो भारत एक प्रमुख लाभार्थी होगा। बहुपक्षीय समझौते के अभाव में, अर्थव्यवस्था को व्यापार और निवेश के और अधिक उदारीकरण से भी लाभ होगा। हालांकि भारत अपने निर्यात बाजारों पर प्रतिबंधों का सामना करता है, ओईसीडी सिमुलेशन से पता चलता है कि यदि भारत व्यापार को 20% तक सीमित करने वाले टैरिफ और गैर-टैरिफ उपायों में कटौती करता है और व्यापार सुविधा में सुधार करता है, तो घरेलू उत्पादन में लगभग 3%, निर्यात में 14% की वृद्धि होगी। इससे विनिर्माण क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

भारत ने कई अवसरों का फायदा उठाया है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की भागीदारी बढ़ी है और जीडीपी, व्यापार, विदेशों में रहने वाले भारतीयों की संख्या के संदर्भ में अधिक है, हालांकि अंतर्राष्ट्रीय पूंजी के संदर्भ में कम है (रेखाचित्र 1.1)। भारत ने प्रौद्योगिकी विकसित की है और बड़ी संख्या में देशों को कई वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात करने में सफल रहा है। इसने उन क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल की है जो निकट भविष्य में उच्च मांग में होंगे (जैसे सूचना प्रौद्योगिकी और संचार (आईटीसी) सेवाएं, फार्मास्यूटिकल्स और चिकित्सा उपकरण)। दुनिया में सबसे बड़े भारत के प्रवासी भारतीयों ने व्यापार नेटवर्क विकसित करने में मदद की है, जबकि प्रवासियों के प्रेषण और बचत ने घरेलू खपत और निवेश का समर्थन किया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 05 May- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की भागीदारी बढ़ी है और जीडीपी, व्यापार, विदेशों में रहने वाले भारतीयों की संख्या के संदर्भ में अधिक है, हालांकि अंतर्राष्ट्रीय पूंजी के संदर्भ में कम है (रेखाचित्र 1.1)। भारत ने प्रौद्योगिकी विकसित की है और बड़ी संख्या में देशों को कई वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात करने में सफल रहा है। इसने उन क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल की है जो निकट भविष्य में उच्च मांग में होंगे (जैसे सूचना प्रौद्योगिकी और संचार (आईटीसी) सेवाएं, फार्मास्यूटिकल्स और चिकित्सा उपकरण)। दुनिया में सबसे बड़े भारत के प्रवासी भारतीयों ने व्यापार नेटवर्क विकसित करने में मदद की है, जबकि प्रवासियों के प्रेषण और बचत ने घरेलू खपत और निवेश का समर्थन किया है।

चित्र 1.1. भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख अभिनेता बन गया है।

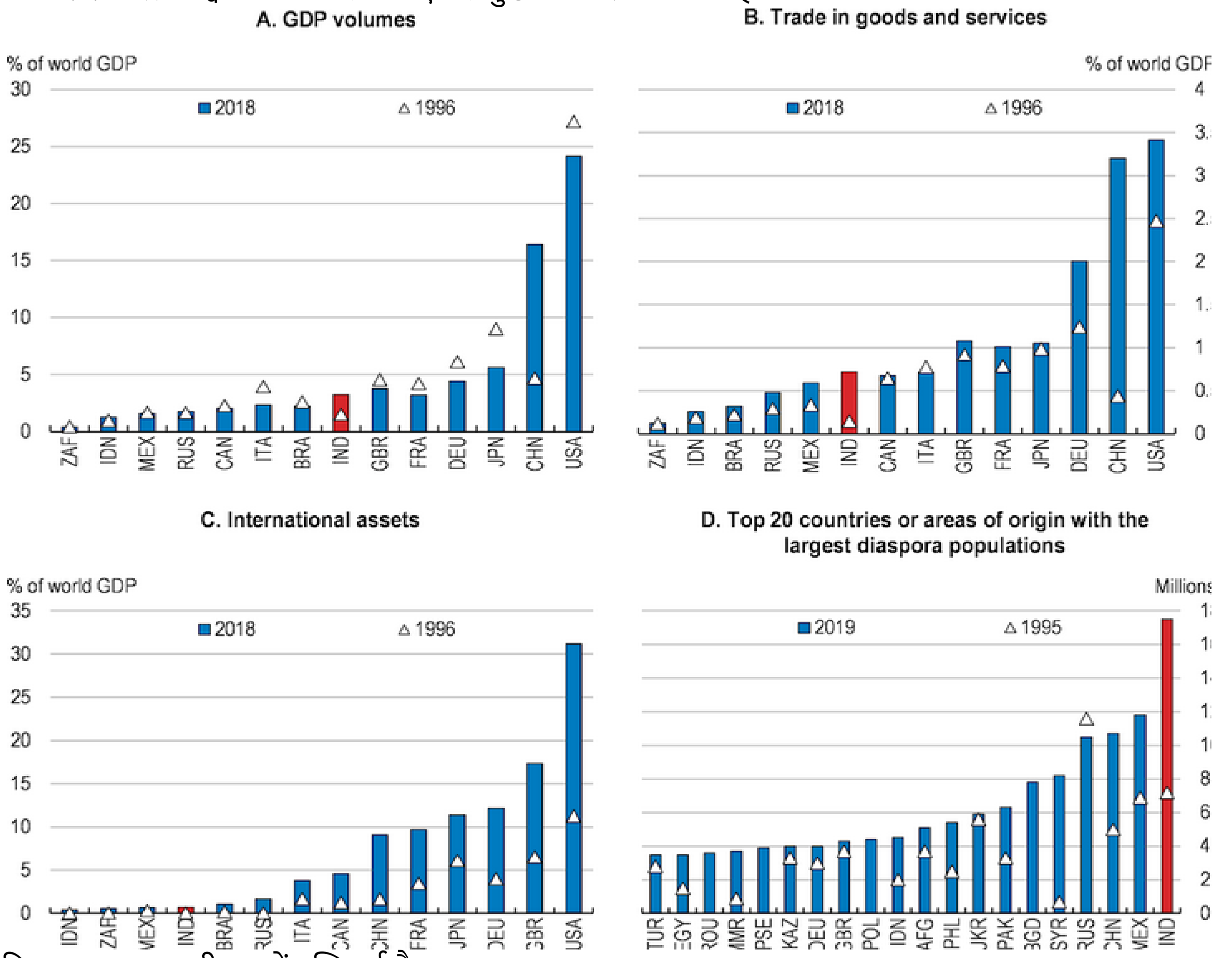

चित्र 1.2. व्यापार तीव्रता में वृद्धि हुई है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 05 May- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

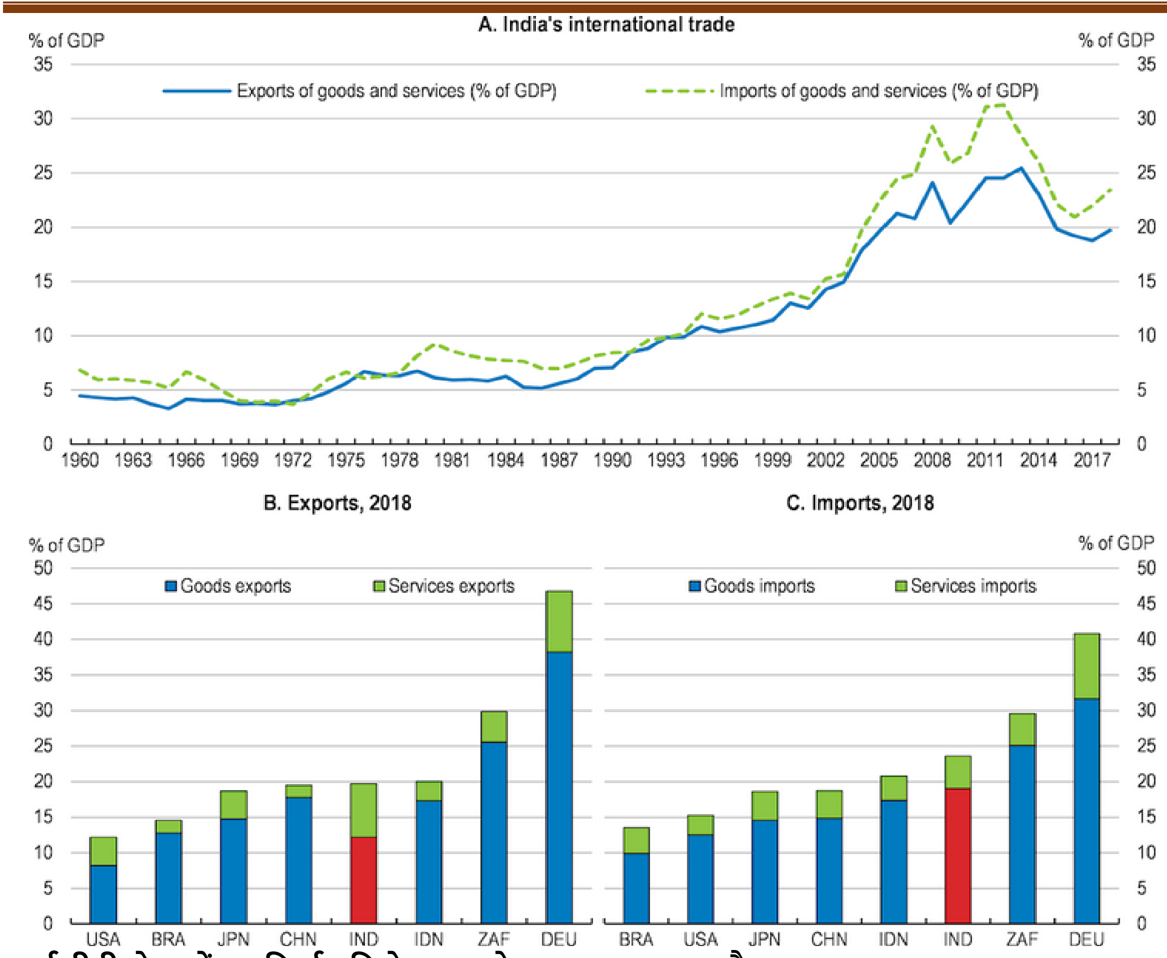

आईसीटी सेवाओं का निर्यात विशेष रूप से उत्साहजनक रहा है।

सेवा निर्यात में वृद्धि तीव्र रही है (रेखाचित्र 1.4)। विश्व सेवा व्यापार में भारत की हिस्सेदारी 1995 में 0.5% से बढ़कर 2018 में 3.5% हो गई। भारत व्यावसायिक सेवाओं (बेंज, खन्ना और नॉर्डस, 2017[3]) के प्रमुख निर्यातकों में से एक बन गया है, विशेष रूप से सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी (आईसीटी) क्षेत्र में (बॉक्स 1.1)। चिकित्सा और कल्याण पर्यटन भी सेवा निर्यात में वृद्धि का समर्थन कर रहा है, रोगियों को कुछ भारतीय अस्पतालों में प्रतिस्पर्धी लागत पर उच्च गुणवत्ता वाले चिकित्सा उपचार की मांग है। सेवाओं का निर्यात अब कुल निर्यात का एक तिहाई से अधिक है, जिसमें आईसीटी में सबसे बड़ा हिस्सा है (चित्रा 1.5) - अधिकांश ओईसीडी देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में एक बड़ा हिस्सा। भारत पर्यटन, परिवहन और संभार तंत्र सहित बारह अभिनिर्धारित चैंपियन सेवाओं के लिए विशिष्ट कार्य योजनाएं भी विकसित कर रहा है।

चित्र 1.3. निर्यात प्रदर्शन ठोस रहा है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 05 May- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

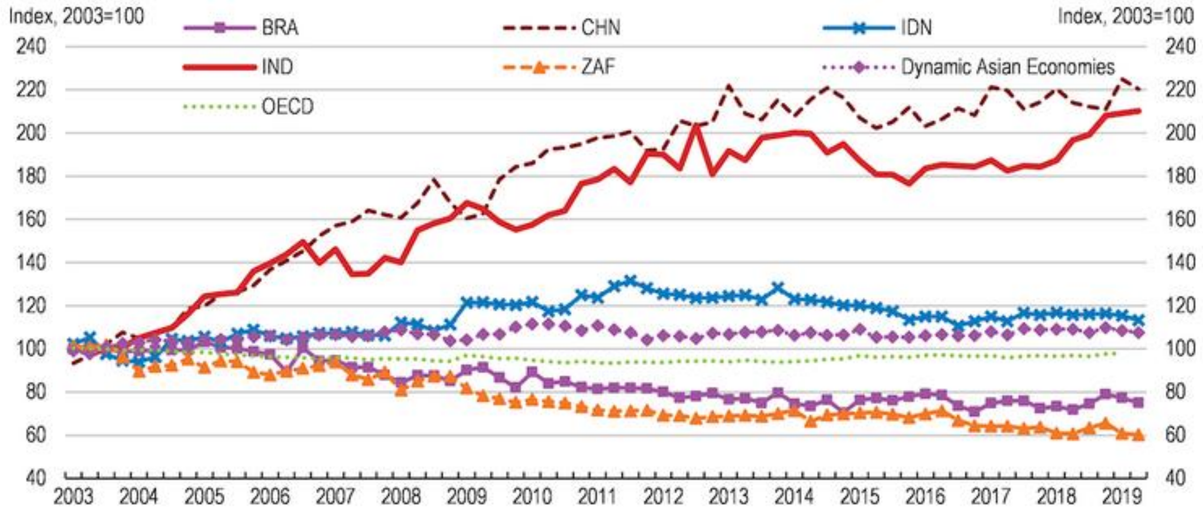

चित्र 1.4. सेवा निर्यात में वृद्धि तेज रही है

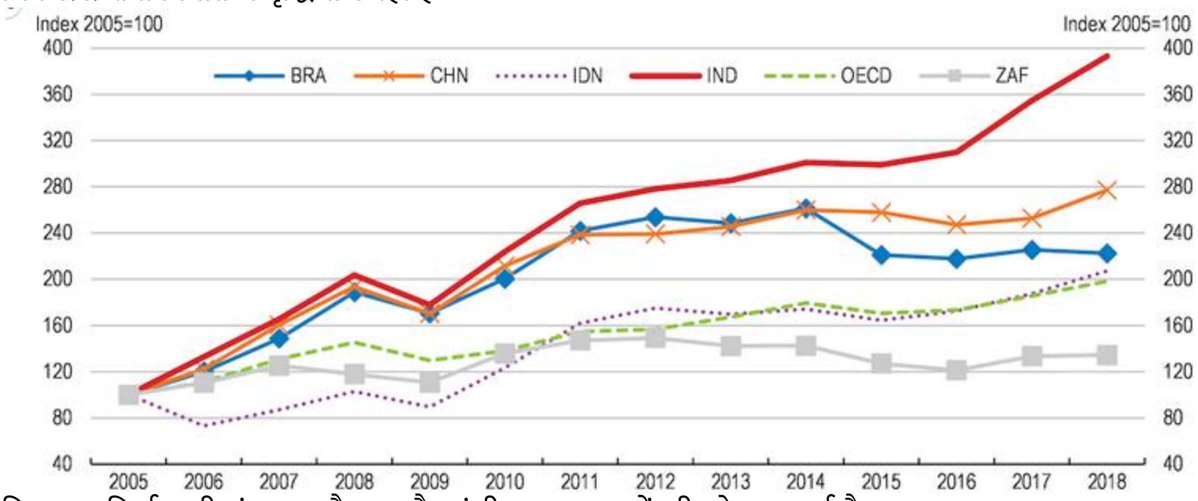

चित्र 1.5. निर्यात की संरचना कौशल और पूंजी-गहन वस्तुओं की ओर बढ़ गई है।

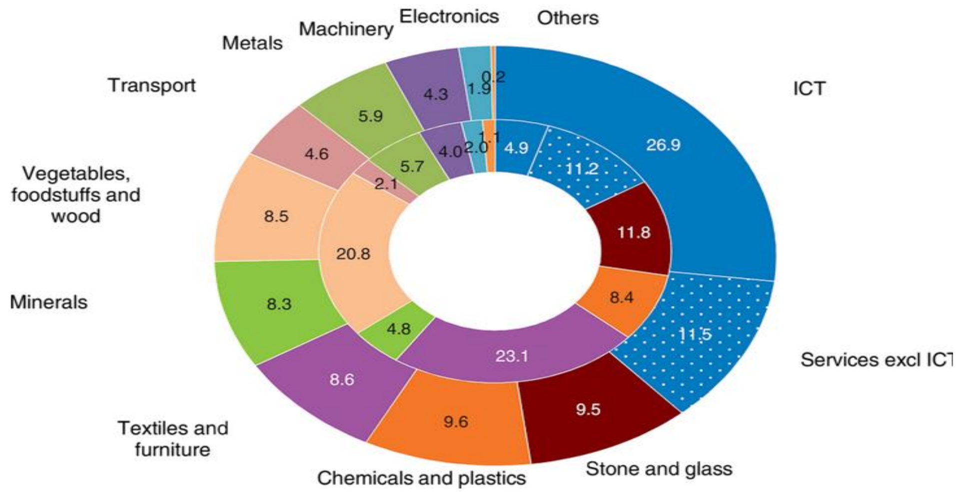

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 05 May- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारत ने कुछ सामानों के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है

कुछ कौशल और पूंजी-गहन वस्तुओं के लिए भारत की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी है। फार्मास्युटिकल निर्यात के लिए, भारत ने 2018 में कुल विश्व निर्यात का 2.5% हिस्सा लिया, जो 1995 में 1.1% था, जिससे यह दुनिया का 11 वां सबसे बड़ा निर्यातक बन गया और अब तक, ईएमई में पहला है। इलेक्ट्रॉनिक सामान ों के स्मार्टफोन सेगमेंट में, भारत ने खुद को शुद्ध आयातक से शुद्ध निर्यातक में बदल दिया है। कच्चे तेल की शोधन क्षमता का विस्तार हुआ है (अधिकांश कच्चे तेल का आयात किया जाता है), और कुल निर्यात में पेट्रोलियम उत्पादों का हिस्सा 1995 में व्यापारिक निर्यात के 1.5% से बढ़कर 2018 में 15.1% के करीब हो गया है। भारत तराशे और पॉलिश किए गए हीरे का सबसे बड़ा निर्माता भी है, जो अपने उत्पादन का 93% निर्यात करता है।

भारत की निर्यात टोकरी अच्छी तरह से विविध है।

भारत निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की संख्या बढ़ाने और नए बाजारों/देशों की सेवा करने में सफल रहा है (**रेखाचित्र 1.6**)। इसकी निर्यात टोकरी अत्यधिक विविध है और उभरती अर्थव्यवस्थाओं को निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। इस तरह के विविधीकरण से नई मांगों को समायोजित करने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था की उच्च क्षमता का पता चलता है। यह एक देश में या एक विशिष्ट उत्पाद के लिए कम मांग जैसे जोखिमों के जोखिम को भी कम करता है।

चित्र 1.6. निर्यात उत्पादों और बाजारों में विविधता है।

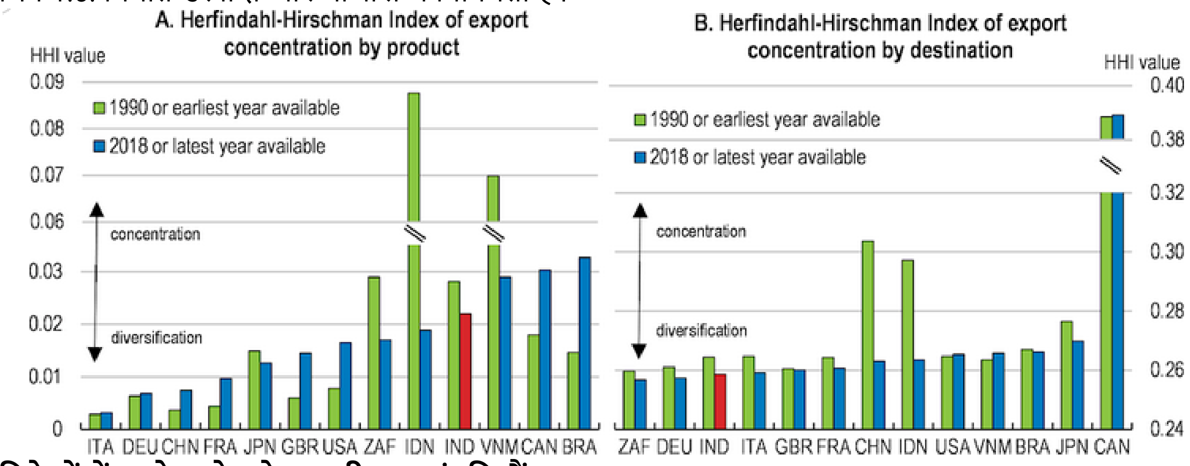

विदेशों में रहने वाले बड़े प्रवासी एक संपत्ति हैं।

भारत में दुनिया का सबसे बड़ा प्रवासी है (चित्र 1.7)। यह 2006-16 की अवधि में ओईसीडी देशों में नए प्रवासियों के लिए मूल का चौथा शीर्ष देश था, जिसमें कई भारतीय गैर-ओईसीडी (विशेष रूप से खाड़ी) देशों में पलायन कर रहे थे। ओईसीडी देशों में नामांकित भारतीय छात्रों की संख्या भी बड़ी है और कुछ ओईसीडी देशों में अधिक प्रतिबंधात्मक आव्रजन नीतियों की संभावनाओं के बीच हाल के वर्षों में धीमी गति से वृद्धि जारी है। विदेशों में रहने वाले भारतीय भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मूल्यवान संपत्ति हैं। वित्त वर्ष 2018-19 में रेमिटेंस से आने वाला निवेश जीडीपी का 2.9 फीसदी रहा। उन्होंने गरीबी को कम करने, शिक्षा और स्वास्थ्य में खपत और

निवेश बढ़ाने में योगदान दिया है। वे चालू खाता वित्तपोषण का एक स्थिर स्रोत भी हैं। अनिवासी भारतीय भी वित्तीय प्रणाली में जमा या प्रत्यक्ष निवेश के माध्यम से घरेलू निवेश का समर्थन करते हैं।

चित्र 1.7. माइग्रेशन फ्लो, स्टॉक और रेमिटेंस बड़े हैं

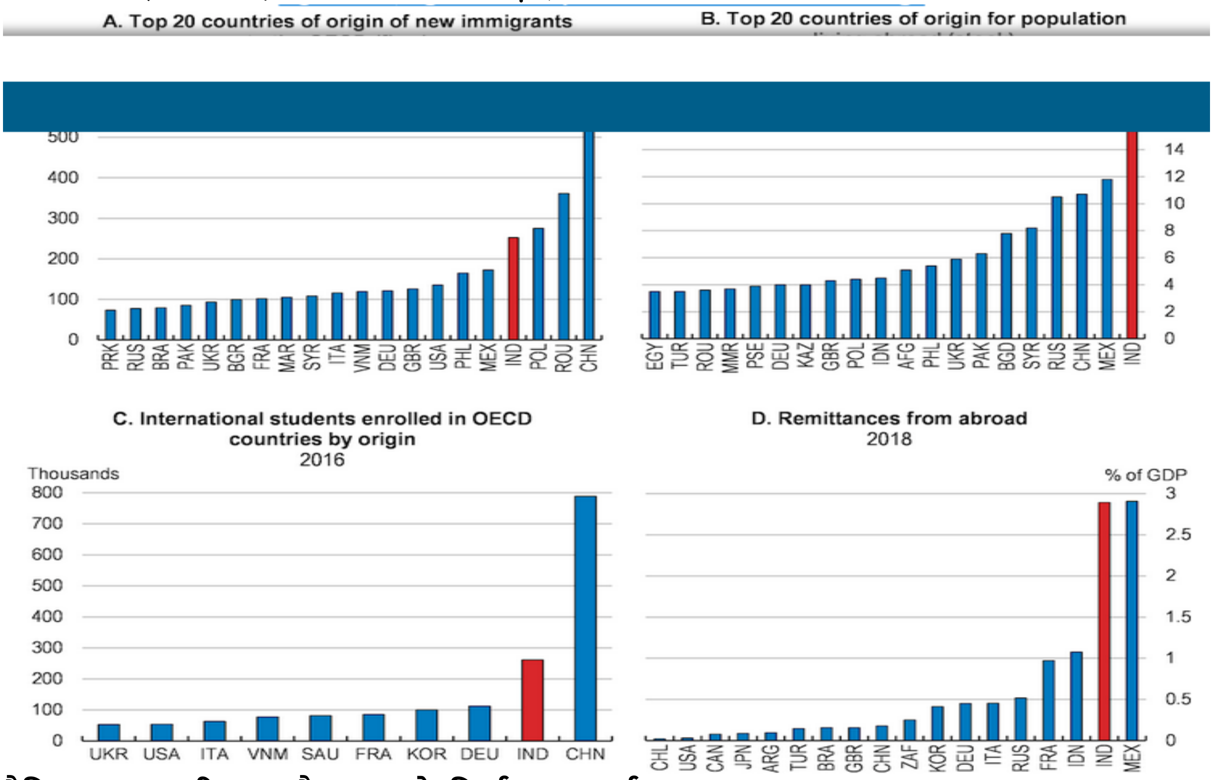

वैश्विक व्यापार परिदृश्य और भारत के निर्यात का पुनर्गठन

इस वैश्विक सुधार के आधार पर, दुनिया वैश्विक व्यापार में तेजी देख रही है। एशियाई विकास बैंक ने अपने हालिया अपडेट 1 में कहा कि अधिकांश उभरती अर्थव्यवस्थाओं (चीन को छोड़कर) में विनिर्माण निर्यात में उछाल देखा जा रहा है, "विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स में, जहां प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मजबूत हो रहा है"। दक्षिण-पूर्व एशिया की अर्थव्यवस्थाएं भी सीमा पार विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ बढ़ती गतिविधि से लाभान्वित हो रही हैं। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने हाल ही में अपनी सितंबर 2017 प्रेस विज्ञप्ति में वर्ष 2017 में वैश्विक व्यापार के लिए विकास पूर्वानुमान को 2.4% से 3.6% तक अपग्रेड किया है। विशेष रूप से, 2017 की पहली छमाही में, विश्व व्यापार में 4.2% (वर्ष-दर-वर्ष) की जोरदार वृद्धि हुई, जो विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात से प्रेरित थी, जिसमें विकसित अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात में 3.1 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 5.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं द्वारा आयात में भी क्रमशः 2.1% और 6.9% की वृद्धि हुई। इसके अलावा, विश्व जीडीपी वृद्धि के लिए व्यापार वृद्धि का अनुपात भी ठीक होने और 1.3 के आसपास पहुंचने के लिए तैयार है, जो पिछले 5 वर्षों में उच्चतम स्तर पर होगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था और इसका व्यापार परिदृश्य

भारत की विकास गाथा, विशेष रूप से 21 वीं सदी की शुरुआत के बाद से उल्लेखनीय रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपने आर्थिक उदारीकरण के बाद से एक लंबा सफर तय किया है, और आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण 2011-12 से 2013-14 की अवधि के दौरान भारत ने अपेक्षाकृत मध्यम वृद्धि देखी, लेकिन अर्थव्यवस्था ने 2014-15 से 2016-17 की अवधि के दौरान 7.5 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की, जो अन्य उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर से बहुत अधिक है। पिछले एक साल में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) और उच्च मुद्रा नोटों के विमुद्रीकरण के साथ प्रमुख आर्थिक नीतिगत विकास देखा गया है।

वैश्विक आयात मांग के अनुरूप भारत की निर्यात क्षमता को संरेखित करना

भारत के निर्यात के संबंध में, जबकि 2006-07 से 2016-17 की अवधि में व्यापारिक निर्यात 126 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 276 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है, भारत की निर्यात क्षमता और आयात मांग के अनुरूप चुनिंदा देशों को चुनिंदा उत्पादों के निर्यात के लिए भारी संभावना बनी हुई है। वैश्विक आयात मांग की तुलना में भारत की निर्यात क्षमता की पहचान करने और संरेखित करने की आवश्यकता है। इस तरह के गहन विश्लेषण एक्जिम बैंक में अनुसंधान अध्ययनों का केंद्र रहा है। इस तरह के अध्ययनों में किए गए व्यापार में वैश्विक रुझानों के तुलनात्मक विश्लेषण ने दिलचस्प परिणाम दिए हैं।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, वैश्विक विकास में तेजी से अंतरराष्ट्रीय व्यापार के पुनरुद्धार में योगदान की उम्मीद है, लेकिन दुनिया भर में विशेष रूप से विकसित बाजार अर्थव्यवस्थाओं द्वारा संरक्षणवादी व्यापार नीतियों को अपनाने की संभावना जैसे नकारात्मक जोखिम व्यापार की वसूली पर दबाव डालते हैं। नतीजतन, भारत और अन्य उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के लिए, निर्यात आधारित आर्थिक विकास पर निर्भर करते हुए, वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए एक सक्रिय रुख अपनाने की बढ़ती आवश्यकता है। हम जो कर सकते हैं (या आपूर्ति आधारित) उसके निर्यात से अपना ध्यान स्थानांतरित करने की आवश्यकता है, उन वस्तुओं पर जो विश्व स्तर पर मांग की जाती हैं। मांग आधारित निर्यात बास्केट विविधीकरण दृष्टिकोण से निर्यात को बढ़ावा मिल सकता है। जबकि भारत ने हाल के दिनों में उल्लेखनीय प्रगति की है, यह आज और भी अधिक चुनौतीपूर्ण वैश्विक वातावरण का सामना कर रहा है। यह सुनिश्चित करना निश्चित रूप से एक कठिन, फिर भी संभव कार्य है कि भारत खुद को वैश्विक आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण चालक के रूप में फिर से स्थापित करे।

संदर्भ

- अग्रवाल, ए. (2010), "भारत में एंटी-डंपिंग के व्यापार प्रभाव: किसे लाभ होता है?", *द इंटरनेशनल ट्रेड जर्नल,* वॉल्यूम 25/1, पीपी 112-158, http://dx.doi.org/10.1080/08853908.2011.532047।

- पेरी (2014), "व्यापार पर आप्रवासियों के नेटवर्क प्रभावों को अलग करना", *विश्व अर्थव्यवस्था,* खंड 37, पीपी 434-455, http://dx.doi.org/ 10.1111/
- गोंजालेस (2019), "इंट्रा-ईईए एसटीआरआई डेटाबेस: कार्यप्रणाली और परिणाम", ओईसीडी *व्यापार नीति पत्र,* संख्या 223, ओईसीडी प्रकाशन, पेरिस, https://dx.doi.org/10.1787/2aac6d21-en।
- बेंज, एस., ए. खन्ना और एच. नॉर्डस (2017), "भारतीय अर्थव्यवस्था की सेवाएं और प्रदर्शन: विश्लेषण और नीति विकल्प", ओईसीडी *व्यापार नीति पत्र,* संख्या 196, ओईसीडी प्रकाशन, पेरिस, https://dx.doi.org/10.1787/9259fd54-en।
- ब्रेस्की, एस., एफ. लिसोनी और ई. मिगुएलेज़ (2019), *क्या भारत को अमेरिका में उच्च कौशल वाले प्रवासन से लाभ होता है?*भारत के लिए विचार, https://www.ideasforindia.in/topics/productivity-innovation/does-india-gain-from-high-skilled-migration-to-the-us.html।
- गॉर्डन और एफ वैन टोंगेरेन (2018), "गैर-टैरिफ उपायों के विज्ञापन मूल्य समकक्षों का आकलन: मूल्य-आधारित और मात्रा-आधारित दृष्टिकोणों का संयोजन", ओईसीडी *व्यापार नीति पत्र,* संख्या 215, ओईसीडी प्रकाशन, पेरिस, https://dx.doi.org/10.1787/f3cd5bdc-en।
- दास कृष्णा, जी और आर कुमार (2015), "भारतीय निर्यात - वैश्विक प्रतिस्पर्धा का नुकसान", *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक,* खंड एल / 34, पृष्ठ 20-23।
- डोडानी, एस और आर लापोर्ट (2005), *विकासशील देशों से प्रतिभा पलायन: प्रतिभा पलायन को ज्ञान लाभ में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है?.*
- एल्सिग (2014), "अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों का डिजाइन: एक नया डेटाबेस पेश करना", *अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की समीक्षा,* वॉल्यूम 9/3, पीपी 353-375।
- एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक ऑफ इंडिया (2019), *भारत का सेवा व्यापार उदारीकरण और निर्यात संवर्धन - सरकार की नीति बनाने के लिए एक अध्ययन।*
- जियोवनेट्टी, जी और एम लानाती (2015), "भारतीय जातीय नेटवर्क के अप्रत्यक्ष समर्थक-व्यापार प्रभाव", *रिसर्च रिपोर्ट 2015/14, सीएआरआईएम इंडिया सीरीज, यूरोपीय विश्वविद्यालय संस्थान।*
- भारत सरकार (2016), आर्थिक सर्वेक्षण 2015-16 /
- अर्नोल्ड (2019), "विश्व अर्थव्यवस्था में अर्जेंटीना के एकीकरण को बढ़ावा देना", ओईसीडी *अर्थशास्त्र विभाग वर्किंग पेपर्स,* नंबर 1572, ओईसीडी प्रकाशन, पेरिस, https://dx.doi.org/10.1787/7ed95b2b-en।
- Joumard, I., S. Dhaoui and H. Morgavi (2018), “Insertion de la Tunisie dans les chaines de valeur mondiales et role des entreprises offshore”, *Documents de travail du Département des.*
- करायिल, एस (2007), "क्या व्यापार में प्रवासन मायने रखता है? जीसीसी देशों को भारत के निर्यात का एक अध्ययन", *दक्षिण एशिया आर्थिक जर्नल,* खंड 8/1, पृष्ठ 1-20।
- कुमार दास, आर और पी परिदा (2013), "भारत में एफडीआई, सेवा व्यापार और आर्थिक विकास: कारण लिंक पर अनुभवजन्य साक्ष्य", *अनुभवजन्य अर्थशास्त्र,* खंड 45/1, पृष्ठ 217-238।
- (2017), "वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में आसियान के छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों की भागीदारी का मानचित्रण", ओईसीडी *व्यापार नीति पत्र,* संख्या 203, ओईसीडी प्रकाशन, पेरिस, https://dx.doi.org/10.1787/2dc1751e-en।